वैदिक संकलन Vol - II

संस्कृत-साहित्य-सुधा

द्वितीयो भागः

वैदिक-संकलन

प्रधान-सम्पादक

डॉ० मण्डनमिश्रः

निदेशक

सम्पादक

पं. श्री सम्पन्नारायणचार्यः

न्याय मीमांसा, वेदान्त विद्वान

उपनिदेशकः

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्

ए-40, विशाल इन्क्लेव, राजा गार्डन

नई दिल्ली-27

विषय-सूची

१.	अग्निसूक्तम् (ऋग्वेद १-१)	१
२.	मित्रसूक्तम् (ऋग्वेद ३-५९)	७
३.	भिक्षुसूक्तम् (ऋ. वे० १०-११७)	१३
४.	कृषिः (अथर्ववेद--३-१७)	१९
५.	प्रतिवादि पराजयः (अथर्ववेद २-२७)	२५
६.	शालानिर्माणम् (अथर्ववेद ३-१२)	३१
७.	स्वापनम् (अथर्ववेद ४.५)	३७
८.	शङ्खमणिः (मौक्तिकम्) (अथर्ववेद ४-१०)	४१
९.	शत्रुसेनात्रासनम् (अथर्ववेद ५-२१)	४९
१०.	दुःस्वप्नाशनम् (अथर्ववेद ६-४६)	५५
११.	केशदृंहणम् (अथर्ववेद ६-१३६)	५९
१२.	केशवर्धनम् (अथर्ववेद ६-१३७)	६३
१३.	ब्रह्मचर्य सूक्त (अथर्ववेद ११.५) (मन्त्र सं.-१,२,७,८,१०,११, १४, १७, १९, २५-२६	६७
१४.	विवाह सूक्त (अथर्ववेद १४-१२) (मन्त्र संख्या १, २, १३, १९, २२, २३, ३१, ३२, ३५, ३७, ४३, ४४, ४५, ६४	७५
१५.	व्रात्यः (अथर्ववेद १५.१)	८३
१६.	उपनयनब्रह्मचर्यम् (शतपथ ब्राह्मण-११-५-४ और १-१८)	८७
१७.	स्वाध्याय प्रशंसा (शत० ब्रा० ११-५, ७, १-१०)	१०१
१८.	शाङ्खायनारण्यकम् (अध्याय-३)	१०९
१९.	शाङ्खायनारण्यकम् (अ. ४-७-११ कण्डिकाः)	११८
२०.	कठोपनिषद् (अध्याय १-३)	१२७

१. दूरदर्शी धीर लोग देवों से कृपा प्राप्त करने की इच्छा से हलों को जोतते हैं और जुओं को अलग (बैलों के कंधों पर) रखते हैं। देवों में बुद्धि (विश्वास) रखने वाले सुख प्राप्त करने के लिए हल जोतते हैं और जुओं को अलग अलग रखते हैं।

भावार्थ—पृथिवी आदि देवताओं की शक्तियों पर विश्वास रखने वाले कवि (क्रान्तदर्शी) लोग विशेष सुख प्राप्त करने के लिए हलों को जोतते हैं अर्थात् कृषि करते हैं। और जुओं को बैल के कन्धों पर यथा-स्थान बाँधते हैं।

२. हलों को जोतो (जोड़ो) जूओं को फैलाओ, जोती भूमि में सीता (हल की रेखा) बनाने पर इस रेखा में बीज बोओ। अन्न के पूले की उपज हमारे लिए अन्न से भरपूर हों। हँसिए भी पके हुए धान्य को निकट से (अच्छी तरह) काटें।

३. तीक्ष्ण फाल से युक्त, गहरी रेखा खोदने वाला, लकड़ी की मृदु मूठवाला हल भूमि को ऐसे जोते कि वह भेड़, शीघ्रगामी रथ को वहन करने वाले घोडे या बैल और पुष्ट स्त्री निश्चय से दे।

भावार्थ—हल में लोहे का मजबूत नोकदार फार (फाल) लगाया जावे, उसकी मूठ लकड़ी की ऐसी हो जो हल चलाते समय सुखद हो हाथ में चुभे नहीं। यह हल ही गाय-बैल, भेड़ बकरी घोड़ा-घोंड़ी स्त्री पुरुष आदि को उत्तम घास तथा अन्न आदि देकर पुष्ट करता है।